


---

avadhUtAShTakam

——  
अवधूताष्टकं स्वामीशुकदेवस्तुतिः च

——  
Document Information



---

Text title : avadhUtAShTakam

File name : avadhUtAShTakam.itx

Category : aShTaka, deities\_misc

Location : doc\_deities\_misc

Transliterated by : Subrahmanyam Yvs yvspmp at gmail.com

Proofread by : Subrahmanyam Yvs yvspmp at gmail.com, NA

Latest update : May 23, 2015

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 17, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



## अवधूताष्टकं स्वामीशुकदेवस्तुतिः च



श्री परमात्मने नमः ॥

अथ परमहंस शिरोमणि-अवधूत-श्रीस्वामीशुकदेवस्तुतिः

निर्वासनं निराकाङ्क्षं सर्वदोषविवर्जितम् ।

निरालम्बं निरातङ्कं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १ ॥

निर्ममं निरहङ्कारं समलोष्टाश्मकाञ्चनम् ।

समदुःखसुखं धीरं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ २ ॥

अविनाशिनमात्मानं ह्येकं विज्ञाय तत्त्वतः ।

वीतरागभयक्रोधं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

नाहं देहो न मे देहो जीवो नाहमहं हि चित् ।

एवं विज्ञाय सन्तुष्टम् ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

समस्तं कल्पनामात्रं ह्यात्मा मुक्तः सनातनः ।

इति विज्ञाय सन्तुष्टं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ५ ॥

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं कामसङ्कल्पवर्जितम् ।

हेयोपादेयहीनं तं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥

व्यामोहमात्रविरतौ स्वरूपादानमात्रतः ।

वीतशोकं निरायासं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ७ ॥

आत्मा ब्रह्मेति निश्चित्य भावाभावौ च कल्पितौ ।

उदासीनं सुखासीनं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥

स्वभावेनैव यो योगी सुखं भोगं न वाञ्छति ।

यदच्छालाभसन्तुष्टं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ९ ॥

नैव निन्दाप्रशंसाभ्यां यस्य विक्रियते मनः ।

आत्मक्रीडं महात्मानं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १० ॥

नित्यं जाग्रदवस्थायां स्वप्नवद्योऽवतिष्ठते ।  
निश्चिन्तं चिन्मयात्मानं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ११ ॥  
द्वेष्यं नास्ति प्रियं नास्ति नास्ति यस्य शुभाशुभम् ।  
भेदज्ञानविहीनं तं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १२ ॥  
जडं पश्यति नो यस्तु जगत् पश्यति चिन्मयम् ।  
नित्ययुक्तं गुणातीतं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १३ ॥  
यो हि दर्शनमात्रेण पवते भुवनत्रयम् ।  
पावनं जङ्गमं तीर्थं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १४ ॥  
निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निर्मलं परमामृतम् ।  
अनन्तं जगदाधारं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १५ ॥  
॥ इति अवधूताष्टकं समाप्तम् ॥

Encoded and proofread by Subrahmanyam Yvs yvspmp at gmail.com, NA

---

—  
*avadhUtAShTakam*

pdf was typeset on December 17, 2022

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

